Name of the College - A.P.S.M College Barauni
Name - Dr. Rajesh Kumar Suman [MT]
Class - IX, Deptt - Economics
Unit - 02

Topic - What is an Economy

→ अंग्रेजी शासन से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था एक सम्पन्न अर्थव्यवस्था थी। भारतीय उद्योग विशेषकर हस्तकला उद्योग अपनी उन्नत अवस्था में थे। विदेशी व्यापार में भारत अग्रणी था किन्तु अंग्रेजी शासन काल में भारतीय अर्थव्यवस्था उनकी शोषपूर्ण नीतियों के कारण एक निष्क्रिय अर्थव्यवस्था बन गई। ब्रिटिश साम्राज्य में उनकी शोषणात्मक नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप को ~~निम्न~~ निम्नांकित रूपों में देखा जा सकता है।

(1) उपनिवेशी अर्थव्यवस्था [Colonial Economy]
(2) अर्द्ध-सामन्ती अर्थव्यवस्था [Semi-feudal Economy]
(3) पिछड़ी अर्थव्यवस्था [Backward Economy]
(4) आर्थिक गतिहीन अर्थव्यवस्था [Economic Stagnant Economy]
(5) घिसी हुई अर्थव्यवस्था [Depreciated Economy]
(6) विघटित अर्थव्यवस्था [Disintegrated Economy]

(1) उपनिवेशी अर्थव्यवस्था :→ स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप उपनिवेशी अर्थव्यवस्था का था। उपनिवेशवाद का सम्बन्ध विदेशी शासन से होता है, जिसके अन्तर्गत शासक देश शासित देश की अर्थव्यवस्था का संचालन करता है। उसकी आर्थिक नीतियों का निर्धारण करता है और अर्थव्यवस्था के संबंध में निर्णय लेता है।
संक्षेप में, उपनिवेश किसी शासक देश का अधीनस्थ राज्य कहलाता है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था का उपनिवेशी स्वरूप था

(i) भारत ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल एवं कृषि उत्पादों का निर्यात देश था।

(2) ब्रिटिश उद्योगों का माल भारतीय बाजार में बेचा जाता था।
(3) भारत में विदेशी पूँजी निवेश करके भारतीय संसाधनों का शोषण किया जाता था।
(4) भारतीय धन सम्पदा का शोषण ब्रिटिश शासन के हित में हुआ और भारतीय सम्पत्ति उत्प्रवाह हुआ।

(ii) अर्द्ध-सामन्ती अर्थव्यवस्था :- स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था एक अर्द्ध-सामन्ती अर्थव्यवस्था थी अर्थात भारतीय अर्थव्यवस्था न तो पूर्ण रूप से सामन्तवादी थी और न ही पूर्ण रूप से पूँजीवादी।
(i) भारतीय कृषि में सामन्तवाद था। लार्ड कार्नवालिस द्वारा 1793 में आरम्भ की गई जमींदारी प्रथा में भूमि का स्वामित्व जमींदारों को दिया गया और काश्तकारों को भूमि पर कानूनी अधिकार से वंचित कर दिया गया।
(ii) भारतीय उद्योग क्षेत्र में पूँजीवाद था। कपड़ा, जूट, लोहा आदि उद्योग पूँजीमूलक उद्यम बन चुके थे। साथ ही साथ, कॉफी एवं रबड़ बागान भी पूँजीवादी क्षेत्र की परिधि में थे।